बाप रे साँप!

रात के अँधेरे में भूतों के डर से
मैं निकला था अपने पड़ोसी के घर से
रास्ते में निकला था साँप लम्बा-सा
दूर से लग रहा था जो बिलकुल लकड़ी-सा
पास जाकर देखा तो मैं डर गया
मारे डर के पड़ोसी के घर भग गया
रात बीती और जब हुआ उजाला
तब कहीं मैंअपने घर को निकला

–आदित्य तिवारी, छठी, अपना घर, कानपुर

–प्रियांशी मालवीय, तीसरी, शाहपुर,म. प्र.

–नीलूपमा, छठी, दिल्ली

करके देखो ....

कोई भी संख्या चुनें।
उसमें पाँच जोड़ें।
उसका दुगुना करें।
उसमें से चार घटा दें।
उसका आधा करें।
जितनी संख्या सोची थी उतनी घटा दें।
उत्तर आएगा - 3!

–प्रद्युम्न अवस्थी, नवीं, होशंगाबाद, म. प्र.

मेरा नाम बबलेश है। और मेरा नाम तरुण है। हम दोनों भाई होशंगाबाद में नर्मदा जी के किनारे रहते हैं। हमें नदी में तैरना अच्छा लगता है। कभी-कभी हम बड़ी-सी ट्यूब में हवा भर के उसे नाव बनाकर नदी में ले जाते हैं। नदी में बगुले अपनी चोंच से मछली पकड़ते हैं।

जलमुर्गी पानी में डुबकी लगाकर बड़ी-बड़ी मछली पकड़ती है। किलकिला पानी में एक जगह डुबकी लगाकर किसी दूसरी जगह से निकल आता है। हमारे पापा हमें नाव में उस पार ले जाते हैं। नदी के उस पार पर्वत हैं।

नदी के किनारे लोग ककड़ी, तरबूज़ और लौकी, गिलकी, धनिया, मिर्च, टमाटर भी उगाते हैं। पूर (बाढ़) में सब सूखी फसल बह जाती हैं। घाट का मन्दिर आधा डूब जाता है। खूब रंगीन मछलियाँ पूर में आती हैं। एक बहुत बड़ी मछली टंकी घाट पर आई थी। उसकी नाक में सोने की बड़ी-सी नथनी थी। उसे कोई नहीं पकड़ता था। वह हमारे घाट से तैरकर सीधे टंकी घाट पर पहुँच गई। उसकी पूरी पीठ पर काई जमी थी।

पूर आई नदी में हम तैरने नहीं जाते। कभी-तो कोई लोग डूब जाते हैं। पिछली बारिश में तीन लड़के डूब गए थे। फिर जाल डालकर उन्हें सेठानी घाट पर निकाला था। नदी किनारे गुलमोहर के पेड़ पर कठफोड़वा गड्डा करके उसमें रहता है। उसकी चोंच लाल है। नदी से दूर जाकर हमें अच्छा नहीं लगता। शहर की सफाई के लिए हमारा घर तोड़ रहे हैं। हमें अपना घर अच्छा लगता है क्योंकि वह नदी के किनारे पर है।

–तरुण-बबलेश, होशंगाबाद,म. प्र.

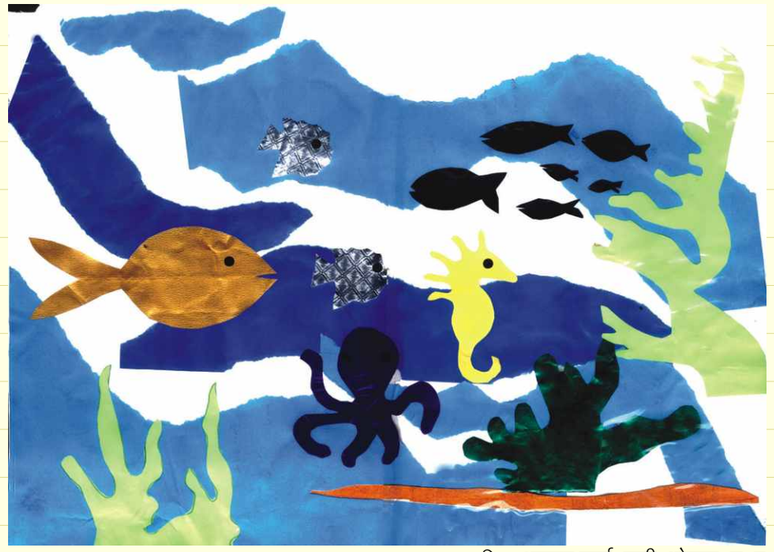

चित्र: अनन्या शर्मा, छठी, भोपाल, म. प्र.

सरिया

एक गाँव में एक मछुवारा था। उसके बेटे का नाम था सरिया। एक बार सरिया सोचने लगा कि मेरे माता-पिता मुझे जंगल में जाने से मना क्यों करते हैं। वहाँ ऐसी कौन-सी चीज़ है? उसने सोचा कि मुझे वहाँ जाकर पता करना चाहिए। वह अपने खाने के लिए तीन बड़ी-बड़ी मछलियाँ लेकर जंगल की ओर चल पड़ा। चलते-चलते रात हो गई थी। लेकिन सरिया आगे ही बढ़ता गया। अचानक उसके सामने एक शेर आ गया। शेर बहुत भूखा था। सरिया ने हिम्मत नहीं हारी। उसने अपनी तीनों मछलियाँ शेर के सामने फेंक दीं। शेर मछलियाँ खाने के लिए चला गया। और सरिया भागता हुआ अपने घर आ गया।

–वेदान्त चाटे, तीसरी, नागपुर, महाराष्ट्र

–रोशनी व्याम, नवीं, भोपाल, म. प्र.

चिड़िया चुग गई खेत

यह कहानी है एक खरगोश और कछुए की। वे दोनों एक जंगल में रहते थे। पक्के मित्र थे। उनमें बस ये फर्क था कि एक तेज़ चलता था और एक धीमे। दोनों सुबह सैर पर जाते। खरगोश आगे निकल जाता था। इससे कछुआ और खरगोश दोनों परेशान हो जाते। एक दिन वे लोमड़ी मौसी के पास गए। लोमड़ी मौसी ने कहा कि तुम यह मोती ले लो। एक महीने में तुम भी खरगोश जैसे तेज़ दौड़ने लगोगे। मोती की कीमत एक हज़ार रुपए है। वे दोनों गरीब थे तो भी उन्होंने उसकी कीमत चुकाई। एक महीना बीत गया। पर कछुआ पहले की ही तरह धीमे चलता था। वे दोनों लोमड़ी मौसी के घर पहुँचे। वहाँ देखा तो लोमड़ी मौसी तो भाग चुकी थी। दोनों सोचने लगे कि अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

–वीरेश सहगल, सातवीं, बीकानेर, राजस्थान

सब याद आ जाएँगे...

पिछली छुट्टियों में हम सब ननिहाल गए थे। वहाँ नाना-नानी, मामा-मामी के अलावा दो हमारे भैया अंबुज और रितिक भी थे। उनके साथ हमने खूब मस्ती की। हमारा वहाँ से वापस आने का मन नहीं था। पर क्या करते छुट्टियाँ खत्म हो गई थीं। घर वापस आने के बाद एक दिन मेरा अपने छोटे भाई कानू के साथ झगड़ा हो गया। मैंने कहा, "एक झापड़ दूँगी, तुम्हें नानी याद जा जाएगी।" उसने तुरन्त ही जवाब दिया, "मैं ऐसा झापड़ दूँगा कि नानी-नाना, मामी-मामा, अंबुज, रितिक सब याद आ जाएँगे।"

उसके इस जवाब पर सब खूब हँसे। अब भी उसकी बात याद करके हँस लेते हैं।

–प्राची माटोलिया, सातवीं, सोनभद्र, उ.प्र.